

# ब्रांड यूपी को वैश्विक पहचान दिलाने की तैयारी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के 75 जिलों के उत्पादों की वैश्विक मांग और निर्यात में लगातार 9-10 फीसदी सालाना वृद्धि के बाद औद्योगिक विकास विभाग ने ब्रांड यूपी को दुनिया के बड़े निवेश बाजारों में स्थापित करने की रणनीति बनाई है। इसके तहत यूरोप, अमेरिका और एशिया के देशों में प्रदेश की औद्योगिक क्षमता, उत्पादों और निवेश संभावनाओं की ब्रांडिंग की जाएगी। इसके लिए पेशेवर एजेंसियों और विशेषज्ञों की सेवाएं ली जा रही हैं।

यूपी की चुनौती अब निवेश जुटाने से ज्यादा दुनिया को अपनी औद्योगिक क्षमता से परिचित कराने की है। अंतरराष्ट्रीय कंपनियां निवेश के लिए कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों को आसानी से पहचानती हैं, जबकि यूपी उनकी शुरुआती सूची में नहीं था। अब निवेश सलाह देने वाली अंतरराष्ट्रीय एडवाइजरी कंपनियों से सीधे संपर्क कर लखनऊ, नोएडा समेत यूपी के संभावित निवेश स्थलों को उनकी लोकेशन सूची में शामिल कराया जा रहा है। इससे अरबों रुपये की निवेश योजनाएं बनाने वाली कंपनियों के सामने यूपी को भी विकल्प के रूप में रखा जा सकेगा।

निवेशकों तक पहुंच के लिए विभिन्न देशों और क्षेत्रों के विशेषज्ञों की पेशेवर टीम बनाई गई है। ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (जीसीसी) के लिए कंप्यूटर साइंस विशेषज्ञ सिंगापुर और यूरोप के पेशेवर नेटवर्क के जरिये कंपनियों से संपर्क कर रहे हैं।

विभागीय अधिकारी के मुताबिक निवेशक को केवल जमीन व सुविधाएं दिखाकर नहीं रोका जा सकता। स्टील

एडवाइजरी कंपनियों से सीधा संपर्क, लखनऊ और नोएडा पर फोकस

अंतरराष्ट्रीय कंपनियों की निवेश सूची में यूपी के शहर शामिल करने की रणनीति

## पांच देशों के लिए बनीं डेस्क

- **जापान डेस्क** : तकनीकी, ऑटो, ग्रीन एनर्जी और हाईटेक निवेश
- **जर्मनी डेस्क** : इंजीनियरिंग, ऑटोमोबाइल और मैनुफैक्चरिंग
- **यूके डेस्क** : सेवा क्षेत्र, तकनीक और वित्तीय निवेश
- **सिंगापुर डेस्क** : जीसीसी, लॉजिस्टिक्स, फिनटेक और वैश्विक कंपनियां
- **चीन डेस्क** : मैनुफैक्चरिंग और सप्लाई चेन से जुड़े अवसर

और बेवरेज जैसे क्षेत्रों में यूपी का इकोसिस्टम तैयार है, लेकिन सेमीकंडक्टर, डाटा सेंटर, इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटो पार्ट्स जैसे हाईटेक क्षेत्रों के लिए तकनीकी इकोसिस्टम विकसित करना बाकी है।

जापान की एमएसएमई इकाइयों की तकनीकी क्षमता को मॉडल माना जा रहा है। वहां कंपनियों ने कम वैल्यू एडिशन से शुरुआत कर धीरे-धीरे उच्च वैल्यू एडिशन हासिल किया। ग्रीन हाइड्रोजन में जापान के साथ बढ़ता संपर्क भी इसी रणनीति का हिस्सा है। ब्यूरो